ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)

REVIEW OF RESEARCH

VOLUME - 6 | ISSUE - 9 | JUNE - 2017

दिल्ली में माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता (1993–2010) का अध्ययन

सन्दीप कुमार[1] , डॉ. मुरलीधर मिश्रा[2]

[1] शोध छात्र, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

[2] एसोशिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

सारांश

दिल्ली राज्य में 1993 से 2010 तक माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता का लिंग एवं संगठन की प्रकृति के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। इस विकासात्मक अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से प्रदत्तों का संकलन किया गया। दिल्ली में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि उपलब्धता की प्रवृत्ति में समरूपता नहीं है। विद्यालयों की उपलब्धता में अनियमित वृद्धि हुई है। दिल्ली में माध्यमिक शिक्षा स्तर के छात्रा विद्यालयों की उपलब्धता की संख्या में अत्यन्त कम वृद्धि हुई है। बालिकाओं को मा. शि. के प्रति आकृष्ट करने के लिए राजकीय एवं निजी प्रयास बढ़ाने की आवश्यकता है। राजकीय विद्यालयों की उपलब्धता अत्यंत कम रही है। अतः सरकार को उचित अनुदान की व्यवस्था कर निजी प्रयासों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

प्रयुक्त शब्दावलीः विद्यालयों की उपलब्धता, माध्यमिक विद्यालय, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, विकासात्मक अध्ययन.

प्रस्तावना

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में शिक्षा का विकास तीव्र गति से हुआ है और इसके विकास हेतु अब भी प्रयास किये जा रहे हैं। प्रारम्भिक शिक्षा स्तर पर सर्वशिक्षा अभियान के आने से लगभग 100 प्रतिशत नामांकन का लक्ष्य हासिल करने के करीब पहुँच गये हैं। इस विकास को आगे जारी रखने के लिए माध्यमिक शिक्षा स्तर पर भी सन् 2009 में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान लाया गया। जिसके तहत सन् 2017 तक माध्यमिक शिक्षा पर सार्वभौमिक पहुँच का लक्ष्य रखा गया। इसके अन्तर्गत मुख्यतः पिछड़े क्षेत्रों में 11,000 नए माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खोले जायेंगे।

सन् 1992 में संविधान संशोधन द्वारा दिल्ली को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र घोषित किया गया। सन् 1993 में दिल्ली में पहली विधानसभा का गठन किया गया। दिल्ली में साक्षरता की दर राष्ट्रीय औसत से ज्यादा है। दिल्ली का जनसंख्या घनत्व देश में सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में सर्वाधिक है। यहाँ का उच्च शिक्षा स्तर देश में श्रेष्ठ माना जाता है। यहाँ पर सन् 2011 की जनगणना के अनुसार 97.5 प्रतिशत आबादी शहरी है और ग्रामीण आबादी केवल 2.5 प्रतिशत है, परन्तु यहाँ पर जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा स्लम क्षेत्रों में झुग्गी–झोपड़ियों में रहता है। यहाँ जनसंख्या घनत्व उच्च होने के कारण शिक्षा की व्यवस्था एक चुनौती है। समुचित योजना के अभाव में सम्भव है कि कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में अधिक माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक

विद्यालय हों, और अधिक जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों में कम माध्यमिक स्तर के विद्यालय हो। इसलिए यह आवश्यक है कि आबादी क्षेत्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं का अध्ययन किया जाये।

माध्यमिक शिक्षा के विकास पर देश में राज्य स्तर व पूरे देश में अनेक शोध अध्ययन हुए हैं। इनमें देसाई (1972) ने गुजरात में लड़कियों की माध्यमिक शिक्षा, दास (1973) आसाम में, कौर (1973) पंजाब में, पैकिएम (1982) तमिलनाडू में, शास्त्री (1983) ने उड़ीसा में, जाला ने (1987) मेघालय में, चौधरी (1990) गुजरात में, भारली (1997) ने आसाम में उच्च माध्यमिक शिक्षा पर, मुखोपाध्याय (2002) ने माध्यमिक शिक्षा की चुनौतियों पर, नुना (2007) एवं सक्सेना (2012) आदि राजस्थान ने माध्यमिक शिक्षा के विकास का अध्ययन किया। दिल्ली में शिक्षा के विकास पर हुए अध्ययनों में शर्मा (1977) ने दिल्ली में प्राथमिक शिक्षा के विकास का, बक्सी (1965) ने विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा का, चढ़ा (2001) ने नर्सरी (पूर्व–प्राथमिक) शिक्षा, सिंह व अन्य (2004) ने प्राथमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों की सुविधाओं का अध्ययन किया। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों (माध्य एवं व. माध्य. वि.) की उपलब्धता से सम्बन्धित हुआ कोई अध्ययन शोधकर्ता द्वय को प्राप्त नहीं हुआ। अतः राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता का आकलन आवश्यक प्रतीत होता है।

दिल्ली में विधान सभा के गठन के पश्चात् माध्यमिक शिक्षा का विकास किस प्रकार से हुआ है? इस सम्बन्ध में अनेक प्रश्न दिमाग में उठते हैं? दिल्ली में माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक (माध्य. एवं व. माध्य.) विद्यालयों की उपलब्धता किस प्रकार रही है? दिल्ली में राजकीय और अराजकीय (निजी) विद्यालयों में से कौन से विद्यालय अधिक खोले जा रहें हैं? दिल्ली में वर्तमान में माध्य. एवं व. माध्य. विद्यालयों की स्थिति क्या है? दिल्ली में माध्यमिक स्तर कितने विद्यालय हैं? दिल्ली में छात्र और छात्रा माध्यमिक स्तर विद्यालयों की संख्या में परिवर्तन किस प्रकार हुआ है? क्या छात्र और छात्रा विद्यालय सतत बढ़ रहे हैं? क्या इनमें निरंतरता है? क्या राजकीय विद्यालयों की वृद्धि में निरंतरता है? क्या राजकीय विद्यालयों की संख्या में वृद्धि निजी (अराजकीय) विद्यालयों से अधिक हुई है? क्या दिल्ली में तीव्र गति से माध्यमिक शिक्षा का निजीकरण किया जा रहा है? माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता से सम्बद्ध इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए यह अध्ययन किया गया है।

अध्ययन उद्देश्य

सम्प्रत्ययात्मक पृष्ठभूमि तथा सम्बद्ध साहित्य की विवेचना के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. दिल्ली राज्य में 1993 से 2010 तक माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता का लिंग एवं संगठन की प्रकृति के संदर्भ में अध्ययन करना।
2. दिल्ली राज्य में माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता के विभिन्न संदर्भों का विशेषज्ञों (राज्य के प्रख्यात शिक्षाविद्, राज्य स्तर के शिक्षा अधिकारी, प्राचार्य एवं शिक्षक) की प्रतिक्रियाओं के आधार पर अध्ययन करना।

अध्ययन की परिसीमाएँ

समय एवं संसाधनों की सीमित उपलब्धता, क्षेत्र की व्यापकता, सुविधाओं, शोधकार्य की निरन्तरता, गहनता एवं एकाग्रता की दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन को इस प्रकार परिसीमित किया गया है–

1. इस अध्ययन में दिल्ली में 1993 से 2010 तक के माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता का अध्ययन किया गया है।
2. राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के अन्तर्गत आने वाले राजकीय व मान्यता प्राप्त निजी माध्य. एवं व. माध्य. विद्यालयों के प्रदत्तों को लिया गया है।
3. माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता से सम्बन्धित सभी प्रदत्त दिल्ली में 1993 में विधानसभा गठन की अवधि से लिये गये हैं।
4. दिल्ली (राज्य) सरकार द्वारा प्रशासित व सम्बद्ध विद्यालयों और स्थानीय निकाय विद्यालयों को शामिल किया गया है।

5. दिल्ली में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता का अध्ययन लिंग एवं प्रशासन के संदर्भ में किया गया है।

अध्ययन विधि

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता (1993–2010) का अध्ययन करना था। माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता की प्रकृति एवं इसके संदर्भ को समझने के लिए जनसांख्यिकीय और पृष्ठभौमिक चरों से सम्बन्धित प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से प्रदत्तों का संकलन किया गया। आलोच्य अवधि (1993–2010 तक) में दिल्ली में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता का वर्णन होने के कारण यह अध्ययन वर्णनात्मक प्रकार का है। दिल्ली में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता को एक इकाई के रूप में लेने पर यह एक वैयक्तिक अध्ययन है। इस अध्ययन में चरों की वर्तमान स्थिति एवं पारस्परिक सम्बन्धों को स्पष्ट किया गया। यह अध्ययन अतीत और वर्तमान से सम्बन्धित है तथा अवधि विशेष में शैक्षिक विकास की प्रवृत्ति का विश्लेषण होने के कारण यह एक विकासात्मक अध्ययन है।

शोध प्रक्रिया एवं क्रियाविधि

प्रदत्तों का संकलन प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से किया गया है। संख्यात्मक प्रदत्त मुख्यतः मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के शिक्षा निदेशालय सहित विभिन्न सरकारी कार्यालयों के अभिलेखों और प्रतिवेदनों, वेबसाइट्स से लिए गए हैं। दिल्ली राज्य में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता के विभिन्न सन्दर्भों का अध्ययन करने के लिए इस राज्य में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता के विभिन्न पहलुओं की जानकारी रखने वाले विशेषज्ञों (शिक्षाविदों, राज्य स्तर के शिक्षा अधिकारियों, विद्यालयों के प्राचार्यों एवं शिक्षकों) की प्रतिक्रिया लेने के लिए स्वनिर्मित साक्षात्कार सूची का प्रशासन किया गया।

माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता से सम्बन्धित चरों के संख्यात्मक प्रदत्तों का सारणीयन किया गया। इन प्रदत्तों को जनसांख्यिकीय एवं पृष्ठभौमिक चरों के वर्गीकरण के अनुरूप निर्मित सारणियों को व्यवस्थित किया गया। इन सारणियों को व्यवस्थित करने एवं गणना करने हेतु इन्हें संगणक (कम्प्यूटर) में प्रविष्ट किया गया। संगणक की सहायता से इन सारणियों के प्रदत्तों का पृष्ठभौमिक चरों– लिंग एवं विद्यालय संगठन की प्रकृति के आधार पर सुविधा के लिए तीन–तीन वर्षों के अन्तराल पर छः (6) समय श्रेणी बिन्दुओं (1994–95, 1997–98, 2000–01, 2003–04, 2006–07, 2009–10) को लिया गया। यहाँ यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि बिन्दु वर्ष 1993 एवं 1994 के उपलब्ध प्रदत्त लगभग एक जैसे हैं। सम्भवतः दिल्ली विधानसभा और दिल्ली सरकार गठन का वर्ष होने के कारण प्रदत्तों का संग्रहण ठीक प्रकार से नहीं हुआ हो। इसलिए शोध की आन्तरिक वैद्यता को ध्यान में रखते हुए 'समय श्रेणी विश्लेषण' का आरम्भ बिन्दु वर्ष 1994–95 से किया गया है। चूँकि अध्ययन की आलोच्य अवधि का विस्तार 1993 से 2010 तक है इसलिए दशकीय शैक्षिक विकास के अध्ययन के लिए आलोच्य अवधि के दो तार्किक कालखण्ड 1993–2000 को प्रथम/पहला दशक एवं 2001–2010 को दूसरे दशक के रूप में वर्गीकृत किया गया।

उपर्युक्त समय श्रेणी बिन्दुओं के आधार पर पार्श्व चित्रों (रेखाचित्रीय प्रस्तुतीकरण) का निर्माण किया गया। अतः इन रेखाचित्रों की सहायता से आलोच्य अवधि में पृष्ठभौमिक चरों के संदर्भ में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता की प्रवृत्ति का विश्लेषण किया गया। शैक्षिक विकास के संकेतक समय के सापेक्ष, विभिन्न पृष्ठभौमिक चरों के सापेक्ष किस प्रकार बढ़े अथवा घटे हैं या स्थिर रहे हैं, इसका अध्ययन किया गया। इस हेतु त्रिवर्षीय, औसत दशकीय व कुल वृद्धि दर की सहायता ली गयी। वृद्धि दर विश्लेषण के साथ–साथ आवृत्ति एवं प्रतिशत विश्लेषण तथा आवश्यकतानुसार तुलनात्मक अनुपातिक विश्लेषण की सहायता ली गयी है और आरम्भिक शोध निष्कर्ष प्राप्त किये गये। आरम्भिक शोध निष्कर्षों की माध्यमिक शिक्षा के विकास हेतु निर्मित शैक्षिक योजनाओं व कार्यक्रमों तथा दिल्ली राज्य में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता के विभिन्न संदर्भों को समझने के लिए विशेषज्ञों (राज्य के प्रख्यात शिक्षाविद्, राज्य स्तर के शिक्षा अधिकारी, प्राचार्य एवं शिक्षक) की प्रतिक्रियाओं का विषयवस्तु विश्लेषण की सहायता से गुणात्मक विश्लेषण किया गया। इस प्रकार मात्रात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषण का समेकन करते हुए प्रकार शोध उद्देश्य प्राप्त किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण, निष्कर्ष एवं विवेचना

माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की कुल उपलब्धता

दिल्ली में माध्य. एवं व. माध्य. विद्यालयों की कुल उपलब्धता का विश्लेषण सारणी 1 व रेखाचित्र 1 की सहायता से किया गया है–

सारणी 1

दिल्ली में माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता

सत्र	संख्या में वृद्धि	वृद्धि दर
1994–95	1236	–
1997–98	+326	+26.38 प्रतिशत
2000–01	+24	+1.54 प्रतिशत
2003–04	+92	+5.80 प्रतिशत
2006–07	+19	+1.13 प्रतिशत
2009–10	+127	+7.48 प्रतिशत
कुल वृद्धि दर		
1993–2010	+588	+47.57 प्रतिशत
दशकीय वृद्धि दर		
1993–2000	+350	+28.32 प्रतिशत
2001–2010	+238	+15.00 प्रतिशत

रेखाचित्र 1

दिल्ली में माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता

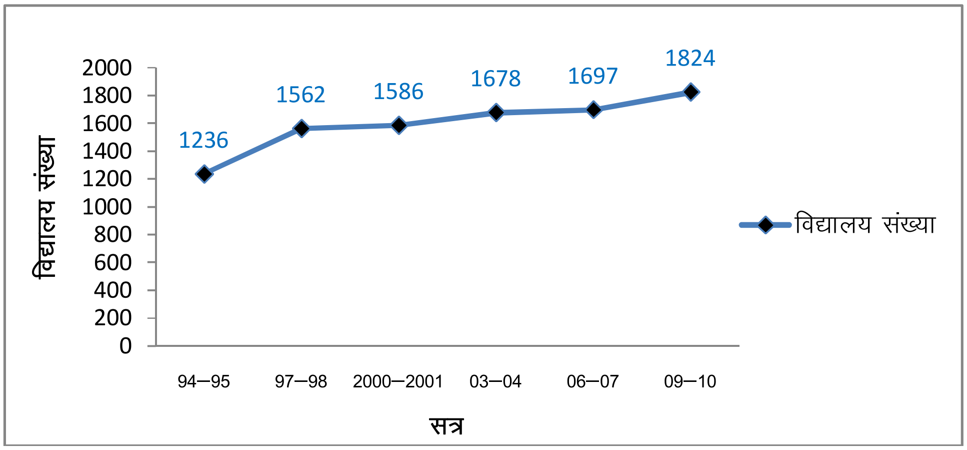

उपर्युक्त सारणी 1 व रेखाचित्र 1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि दिल्ली में वर्ष 1994–95 में 1236 माध्य. एवं व. माध्य. विद्यालयों की उपलब्धता थी। बिन्दु वर्ष 1997–98, 2000–01, 2003–04 2006–07 तथा 2009–10 में क्रमशः धनात्मक प्रतिशत वृद्धि दर 26.38, 1.54, 5.80, 1.13 एवं 7.48 के साथ 1562, 1586, 1678, 1697 एवं 1824 तक पहुँच गयी। आलोच्य अवधि के बिन्दु वर्षों में धनात्मक 7.48 प्रतिशत वृद्धि दर के साथ विद्यालयों की संख्या में सर्वाधिक वृद्धि बिन्दु वर्ष 1997–98 में हुई। रेखाचित्र के अनुसार विद्यालयों की संख्या में वृद्धि हमेशा धनात्मक रही है। प्रथम दशक 1993–2000 में जहाँ वृद्धि दर धनात्मक 28.32 प्रतिशत रही वहीं जबकि बिन्दु वर्ष 2000–01 से 2009–10 तक वृद्धि दर अपेक्षाकृत कम धनात्मक 15.00 प्रतिशत रही। सम्पूर्ण आलोच्य अवधि में माध्य. एवं व. माध्य. विद्यालयों की उपलब्धता में वृद्धि दर धनात्मक 47.57 प्रतिशत रही है।

दिल्ली में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि दिल्ली में विद्यालयों की उपलब्धता में वृद्धि की प्रवृत्ति सतत् धनात्मक रही है। बिन्दु वर्ष 1997–98 में इनकी उपलब्धता में आधे से अधिक विद्यालयों की वृद्धि हुई। अन्य बिन्दु वर्षों में इनकी उपलब्धता में वृद्धि अपेक्षाकृत कम रही। बिन्दु वर्ष 1997–98 में विद्यालयों की संख्या में 326 की वृद्धि हुई और यह वृद्धि समग्र आलोच्य अवधि में एक समय श्रेणी बिन्दु वर्ष में सर्वाधिक रही। सबसे कम 19 विद्यालयों की वृद्धि समय श्रेणी बिन्दु वर्ष 2006–07 में रही। आलोच्य अवधि में माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में कुल वृद्धि धनात्मक 47.57 प्रतिशत रही है। विशेषज्ञों के अनुसार इसका प्रमुख कारण निजी विद्यालयों को मान्यता प्रदान करना और नये सरकारी विद्यालय खोलना रहा है। माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति सतत् रही है और इनमें सदैव धनात्मक वृद्धि हुई है। 2009–10 में विद्यालयों की उपलब्धता में वृद्धि प्रारम्भिक शिक्षा स्तर पर लगातार बढ़े नामांकन की वजह से इस स्तर पर नये विद्यालय खोलने के दबाव, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान तथा मा. शि. में बढ़ते निजीकरण की वजह से हुई है।

5.2 संगठन की प्रकृति के आधार पर विद्यालयों की उपलब्धता

दिल्ली में माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता के समय श्रेणी प्रदत्तों को विद्यालय संगठन की प्रकृति के आधार पर राजकीय और अराजकीय विद्यालयों में वर्गीकृत कर विश्लेषित किया गया। संगठन की प्रकृति के आधार पर विद्यालयों की उपलब्धता को सारणी 2 व रेखाचित्र 2 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 2

माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की संगठन की प्रकृति के आधार पर उपलब्धता

सत्र	राजकीय विद्यालय		अराजकीय विद्यालय	
	संख्या में वृद्धि/कमी	वृद्धि दर	संख्या में वृद्धि/कमी	वृद्धि दर
1994–95	760	–	476	–
1997–98	+107	+14.08 प्रतिशत	+219	+46.01 प्रतिशत
2000–01	+44	+5.08 प्रतिशत	–20	–2.88 प्रतिशत
2003–04	–19	–2.09 प्रतिशत	+111	+16.45 प्रतिशत
2006–07	–31	–3.48 प्रतिशत	+50	+6.36 प्रतिशत
2009–10	+90	+10.45 प्रतिशत	+37	+4.43 प्रतिशत
कुल वृद्धि दर				
1993–2010	+191	+25.13 प्रतिशत	+397	+83.40 प्रतिशत
दशकीय वृद्धि दर				
1993–2000	+151	+19.87 प्रतिशत	+199	+41.81 प्रतिशत
2001–2010	+40	+4.39 प्रतिशत	+198	+29.31 प्रतिशत

रेखाचित्र 2
माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की संगठन की प्रकृति के आधार पर उपलब्धता

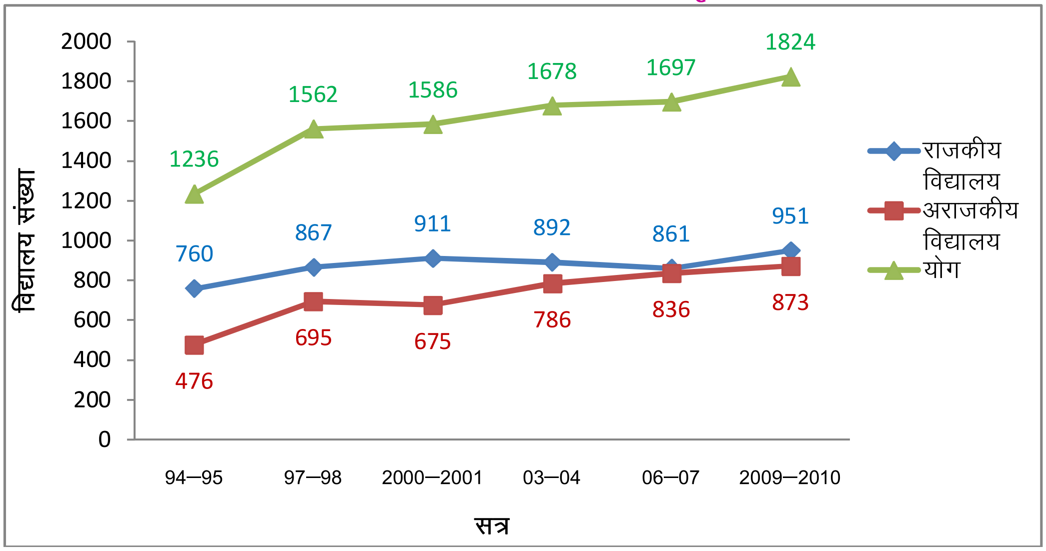

उपर्युक्त सारणी 2 व रेखाचित्र 2 के अध्ययन से यह पता चलता है कि वर्ष 1994—95 में 760 राजकीय विद्यालयों की उपलब्धता थी। 1997—98 में 14.08 प्रतिशत की धनात्मक वृद्धि दर के साथ विद्यालय संख्या बढ़कर 867, 2000—01 में अपेक्षाकृत कम धनात्मक वृद्धि दर 5.08 प्रतिशत के साथ विद्यालय संख्या 911, बिन्दु वर्ष 2003—04 व 2006—07 में क्रमशः ऋणात्मक वृद्धि दर 2.09 व 3.48 प्रतिशत के साथ विद्यालय संख्या पहले 892 व बाद में 861 रह गयी। लेकिन बिन्दु वर्ष 2009—10 में 10.45 प्रतिशत धनात्मक वृद्धि दर के साथ कुल विद्यालय संख्या 951 हो गयी। दिल्ली में 1994—95 में अराजकीय माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 476 थी। 1997—98 में धनात्मक वृद्धि दर 46.01 प्रतिशत के साथ विद्यालय संख्या बढ़कर 695, बिन्दु वर्ष 2000—01 में ऋणात्मक वृद्धि दर 2.88 प्रतिशत के साथ 675 हो गयी। बिन्दु वर्ष 2003—04, 2006—07 एवं 2009—10 में क्रमशः 16.45, 6.36 व 4.43 प्रतिशत धनात्मक वृद्धि दर के साथ बढ़कर 786, 836 व 873 हो गयी। इस दौरान कुल वृद्धि दर धनात्मक 4.43 प्रतिशत रही।

दशकीय वृद्धि दर देखने पर ज्ञात होता है कि राजकीय माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में प्रथम दशक में वृद्धि दर धनात्मक 19.87 प्रतिशत रही जबकि अराजकीय माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में यह वृद्धि दर धनात्मक 41.81 प्रतिशत रही। द्वितीय दशक में राजकीय माध्य. एवं व. माध्य. विद्यालयों की वृद्धि दर धनात्मक 4.39 प्रतिशत रही जबकि अराजकीय विद्यालयों की संख्या में वृद्धि की यह दर धनात्मक 29.31 प्रतिशत रही। कुल वृद्धि दर पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि राजकीय माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में वृद्धि दर धनात्मक 25.13 प्रतिशत तथा अराजकीय विद्यालयों में वृद्धि की दर धनात्मक 83.40 प्रतिशत रही।

दिल्ली में संगठन की प्रकृति के आधार पर माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता का विश्लेषण करने से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि राजकीय विद्यालयों में वृद्धि की प्रवृत्ति सतत् धनात्मक नहीं रही है। इसमें कभी कमी व कभी वृद्धि हुई है। इसमें बिन्दु वर्ष 2003—04 व 2006—07 में ऋणात्मक वृद्धि हुई है, जबकि अन्य बिन्दु वर्षों में धनात्मक वृद्धि की प्रवृत्ति रही है। राजकीय विद्यालयों की संख्या में वृद्धि दर धनात्मक 25.13 प्रतिशत रही है। अराजकीय विद्यालयों की उपलब्धता में बिन्दु वर्ष 2000—01 को छोड़कर अन्य वर्षों में धनात्मक वृद्धि की प्रवृत्ति रही है। अराजकीय विद्यालयों की संख्या में वृद्धि दर धनात्मक 83.40 प्रतिशत रही है। विशेषज्ञों के अनुसार इसका मुख्य कारण अनेक निजी विद्यालयों को सरकार द्वारा मान्यता प्रदान करना था। बिन्दु वर्ष 2000—01 में अराजकीय विद्यालयों की संख्या में 20 की कमी हुई। विशेषज्ञों के अनुसार इस कमी के प्रमुख कारण कई अराजकीय विद्यालयों की मान्यता समाप्त करना और नये विद्यालयों हेतु मान्यता प्राप्त करने के प्रावधानों को कड़ा करना रहे है। राजकीय विद्यालयों की संख्या में मात्र 25 प्रतिशत अर्थात् 191 की वृद्धि हुई

है जबकि नामांकन से तुलना करने पर राजकीय विद्यालयों की माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में नामांकन दुगुना हो गया। बिन्दु वर्ष 2009–10 में विद्यालयों की उपलब्धता में वृद्धि के प्रमुख कारण राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की शुरूआत, राजकीय विद्यालयों में विभिन्न वर्गों के छात्रों को दी जाने वाली छात्रवृत्तियाँ, राजकीय विद्यालयों के परीक्षा परिणाम में सुधार, राजकीय विद्यालयों में दी जाने वाली वेशभूषा सब्सिडी, पुस्तक सब्सिडी, फीस नहीं लगना, और विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक भ्रमण आदि प्रोत्साहक योजनाओं व कार्यक्रमों के फलस्वरूप नामांकन एवं विद्यार्थी ठहराव दर में वृद्धि के चलते नये विद्यालय खोलने की मांग हो सकती है।

5.3 लिंग के आधार पर विद्यालयों की उपलब्धता

दिल्ली में माध्य. एवं व. माध्य. विद्यालयों की उपलब्धता के प्रदत्तों को लिंग के आधार पर वर्गीकृत कर विश्लेषित किया गया है। लिंग के आधार पर विद्यालयों को छात्र व छात्रा विद्यालयों में वर्गीकृत किया गया। लिंग के आधार पर विद्यालयों की उपलब्धता को सारणी 3 व रेखाचित्र 3 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 3

लिंग के आधार पर माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता

सत्र	छात्र विद्यालय		छात्रा विद्यालय	
	संख्या में वृद्धि/कमी	वृद्धि दर	संख्या में वृद्धि/कमी	वृद्धि दर
1994–95	849	–	387	–
1997–98	+261	+30.74 प्रतिशत	+65	+16.80 प्रतिशत
2000–01	+30	+2.71 प्रतिशत	–6	–1.33 प्रतिशत
2003–04	+103	+9.04 प्रतिशत	–11	–2.47 प्रतिशत
2009–10	+165	+13.78 प्रतिशत	–19	–4.37 प्रतिशत
कुल वृद्धि दर				
1993–2010	+559	+65.84 प्रतिशत	+29	+7.50 प्रतिशत
दशकीय वृद्धि दर				
1993–2000	+291	+34.28 प्रतिशत	+59	+15.25 प्रतिशत
2001–2010	+268	+23.51 प्रतिशत	–30	–06.73 प्रतिशत

रेखाचित्र 3

लिंग के आधार पर माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता

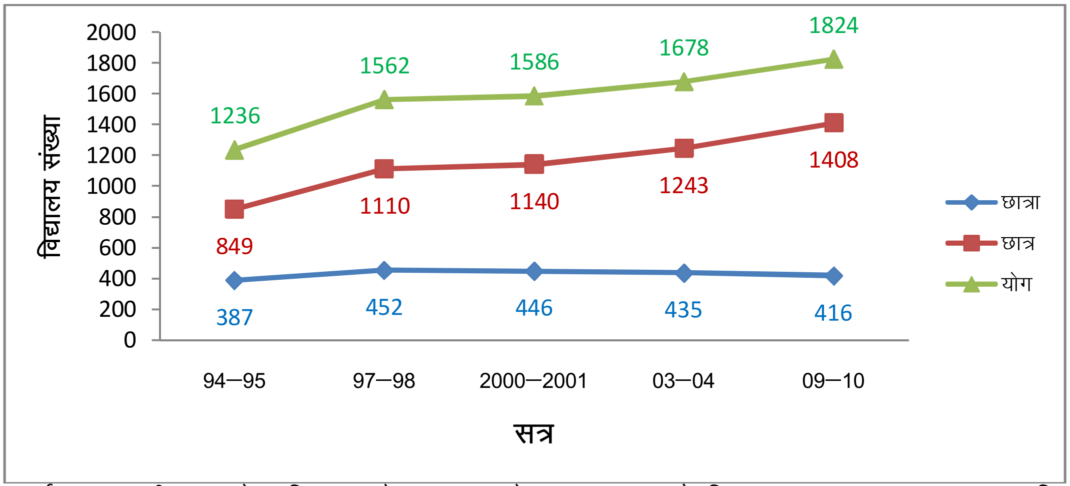

उपर्युक्त सारणी 3 व रेखाचित्र 3 के अध्ययन से पता चलता है कि माध्य. एवं व. माध्य. छात्र विद्यालयों की संख्या बिन्दु वर्ष 1994–95 में 849 थी। बिन्दु वर्ष 1997–98, 2000–01, 2003–04 एवं 2009–10 में

धनात्मक वृद्धि दर 30.74, 2.71, 9.04 एवं 13.78 प्रतिशत के साथ क्रमशः 1110, 1140, 1243 एवं 1408 तक पहुँच गयी। इसी प्रकार दशकीय वृद्धि दर का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि पहले दशक के दौरान छात्र विद्यालयों की संख्या में धनात्मक 34.28 प्रतिशत की वृद्धि तथा दूसरे दशक में 23.51 प्रतिशत की वृद्धि दर धनात्मक रही। आलोच्य अवधि में कुल छात्र विद्यालयों की संख्या का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि बिन्दु वर्ष 1993–94 से बिन्दु वर्ष 2009–10 तक छात्र माध्य. एवं व. माध्य. विद्यालयों की वृद्धि दर धनात्मक 65.84 प्रतिशत रही है।

इसी प्रकार छात्रा माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की संख्या बिन्दु वर्ष 1994–95 में 387 थी। छात्रा विद्यालय बिन्दु वर्ष 1997–98 में 65 बढ़कर 452 हो गए और वृद्धि दर धनात्मक 16.80 प्रतिशत रही। बिन्दु वर्ष 2000–01, 2003–04 एवं 2009–10 में छात्रा विद्यालयों में क्रमशः 1.33, 2.47 एवं 4.37 की ऋणात्मक वृद्धि दर के साथ विद्यालयों की संख्या 446, 435 एवं 416 रह गयी। दशकवार विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि पहले दशक में छात्रा विद्यालयों की वृद्धि दर धनात्मक 15.25 प्रतिशत रही। जबकि दूसरे दशक के दौरान छात्रा विद्यालय की संख्या में 6.73 प्रतिशत की ऋणात्मक वृद्धि दर रही। छात्रा विद्यालयों की कुल वृद्धि का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि बिन्दु वर्ष 1993–94 से बिन्दु वर्ष 2009–10 के दौरान वृद्धि दर धनात्मक 7.50 प्रतिशत रही। आलोच्य अवधि में लिये गये बिन्दु वर्षों में से 2000–01 में छात्रा विद्यालयों की संख्या अधिकतम 452 रही है।

निष्कर्ष–विवेचना

दिल्ली में मा. शि. स्तर पर लिंग के आधार पर विद्यालयों की उपलब्धता का विश्लेषण करने से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि इस स्तर के छात्र विद्यालयों की संख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति सतत् धनात्मक रही है। छात्र विद्यालयों की संख्या में 65.84 प्रतिशत धनात्मक वृद्धि दर रही है। छात्रा विद्यालयों की वृद्धि का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि छात्रा विद्यालयों की संख्या में बिन्दु वर्ष 1997–98 में ही केवल धनात्मक वृद्धि हुई है। इसके पश्चात् निरन्तर छात्रा विद्यालयों की संख्या कम हुई है। सम्पूर्ण अवधि में छात्रा विद्यालयों की संख्या में धनात्मक 7.50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। दिल्ली में माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में अधिकांश वृद्धि छात्र विद्यालयों या सहशिक्षा विद्यालयों की स्थापना के कारण हुई है। छात्र विद्यालयों की संख्या में सदैव धनात्मक वृद्धि हुई है। बिन्दु वर्ष 1997–98 में छात्र विद्यालयों की संख्या में सर्वाधिक वृद्धि हुई है। छात्रा विद्यालयों की संख्या में अत्यन्त कम वृद्धि हुई है। छात्रा विद्यालयों की संख्या में केवल बिन्दु वर्ष 1997–98 में ही वृद्धि हुई है अन्य सभी समय श्रेणी बिन्दु वर्षों में इसमें कमी हुई है। विशेषज्ञों के अनुसार इस कमी के प्रमुख कारण खुलने वाले निजी विद्यालयों का सह शिक्षा विद्यालय होना और राजकीय विद्यालयों की स्थापना हेतु दिल्ली जैसे उच्च जनसंख्या घनत्व वाले राज्य में स्थान का अभाव होना है। सरकार की नीति के अनुसार नये खुलने वाले अधिकांश विद्यालय सह शिक्षा या छात्र विद्यालय होते है।

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी सोद्देश्य कार्य के निहितार्थ अवश्य होते हैं क्योंकि उस कार्य की सार्थकता उसके निहितार्थ से ही होती है। जब शोधकर्ताओं द्वारा किसी विशेष निर्धारित क्षेत्र पर अनुसंधान किया जाता है तभी उस क्षेत्र में स्थित भावी संभावनाओं एवं लाभ के साथ कमियों का भी पता चलता है। इस शोधकार्य में दिल्ली में माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की उपलब्धता का अध्ययन चरों लिंग व संगठन की प्रकृति व के आधार पर किया गया। सभी चरों पर उपलब्धता एक समान नहीं है। शोधकर्ता द्वारा किये गये शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर इस अध्ययन के निम्नलिखित निहितार्थ हो सकते हैं–

1. दिल्ली में माध्य एवं व. माध्य. वि. की उपलब्धता का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि उपलब्धता की प्रवृत्ति में समरूपता नहीं है। विद्यालयों की उपलब्धता में अनियमित वृद्धि हुई है। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक विकास हेतु प्रयासों के लिए योजना बनाकर कार्य नहीं हुआ है। अतः योजनाकारों एवं नीति निर्धारकों के लिए आवश्यक है कि नये विद्यालयों की उपलब्धता योजनाबद्ध ढ़ंग से सुनिश्चित करे।
2. दिल्ली में यद्यपि ग्रामीण क्षेत्र बहुत कम है, परन्तु कच्ची बस्ती क्षेत्र काफी बड़ा है। माध्यमिक स्तर पर राजकीय विद्यालयों की उपलब्धता में अराजकीय (निजी संगठन की प्रकृति) विद्यालयों की वृद्धि के मुकाबले

कमी आ रही है। जो गरीब और कच्ची बस्ती क्षेत्रों में रहने वाली जनता के लिए परेशानी भरी होगी। अतः केन्द्र तथा राज्य सरकार को कच्ची बस्ती /झुग्गी क्षेत्रों में समुचित सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए और ज्यादा से ज्यादा राजकीय विद्यालयों की स्थापना अविलम्ब करनी चाहिए।

3. दिल्ली में माध्यमिक शिक्षा स्तर के छात्रा विद्यालयों की उपलब्धता की संख्या में अत्यन्त कम वृद्धि हुई है। सघन जनसंख्या घनत्व वाले इस राज्य में जहाँ सामाजिक एवं जातिगत विविधता और महिलाओं के साथ बढ़ते अपराध तथा बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिभावकों का उदासीन दृष्टिकोण व अनेक प्रकार के सामाजिक बन्धनों के कारण सह शिक्षा वाले विद्यालयों में बालिकाओं को पढ़ाने में अभिभावकों में रूझान कम है, वहाँ पर अलग से बालिकाओं हेतु माध्यमिक विद्यालय खोलने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
4. आये दिन महिलाओं के साथ अत्याचार और दुर्व्यवहार होते हैं; बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिभावकों का उदासीन दृष्टिकोण व अनेक प्रकार के सामाजिक बन्धनों के साथ ही आज भी सह शिक्षा वाले विद्यालयों में बालिकाओं को पढ़ाने में अभिभावकों में रूझान कम है, कई अभिभावक अपनी लड़कियों को सह शिक्षा विद्यालयों में कम पढ़ाना चाहते है। अतः लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सह शिक्षा विद्यालयों की जगह अलग से बालिका विद्यालय खोले जाने की जरूरत है। बालिकाओं को मा. शि. के प्रति आकृष्ट करने के लिए राजकीय एवं निजी प्रयास बढ़ाने की आवश्यकता है। सरकार को माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों पर गंभीरता पूर्वक ध्यान देना चाहिए। शैक्षिक बजट में बालिकाओं के लिए नवीन विद्यालय खोलने के लिए अविलम्ब वित्तीय प्रावधान करना चाहिए।
5. राजकीय विद्यालयों की उपलब्धता अत्यंत कम रही है। अतः सरकार को उचित अनुदान की व्यवस्था कर निजी प्रयासों को प्रोत्साहित करना चाहिए। अराजकीय विद्यालय खोलने सम्बधी प्रक्रिया को सरल बनाया जाए। इस हेतु विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता है। कार्य प्रणाली में व्यापक बदलाव कर निदेशालय की अपेक्षा जिला या क्षेत्रीय कार्यालय से विद्यालय खोलने की अनुमति देने का प्रयास किया जाना चाहिए। सार्वजनीन मा. शि. के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस स्तर पर नये राजकीय विद्यालय खोले जाने की आवश्यकता है।
6. दिल्ली में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर राजकीय विद्यालयों में नामांकन में निरन्तर वृद्धि हो रही है जबकि राजकीय विद्यालयों की संख्या में अनियमितता रही है। अतः इस और विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। शिक्षा निदेशालय, जिला एवं क्षेत्रीय अधिकारियों को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए विद्यालयों का समय–समय पर निरीक्षण कर वहाँ अध्ययन–अध्यापन एवं अन्य व्यवस्थाओं में सुधार के प्रयास कर सकते हैं।
7. प्रस्तुत शोध अध्ययन बहुमूल्य आँकड़ों का ऐसा संग्रह है, शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले अध्ययन में प्रयुक्त आँकड़ों का अपने ढंग से व्यवस्थित, विभक्त और वर्गीकृत करके उनसे लाभ उठा सकते हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन द्वारा दिल्ली में माध्यमिक शिक्षा की नीति निर्धारित करने वित्तीय अनुमान लगाने में सहायता मिल सकती है। माध्यमिक शिक्षा की किसी समस्या के प्रकटन अथवा निहित आयामों से शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों, प्रशासकों, नियोजकों को सहायता मिल सकती है। इस शोध अध्ययन को व्यापक क्षेत्र में प्रसारित करने पर शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वालों को दिशा प्राप्त होगी।

सन्दर्भ सूची

अग्रवाल, ए. एस. पी. (1995–97), डेवलपमेन्ट ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया, सेलेक्टेड डॉक्यूमेन्ट वॉल्यूम–5.

अग्रवाल, जे. सी. और गुप्ता, एस. (2007), सैकण्डरी एजुकेशन, हिस्ट्री प्रोब्लम एण्ड मैनेजमेन्ट, शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली.

अल्टरनेटिव इकॉनोमिक सर्वे इण्डिया (2007–08), डिक्लाइन ऑफ द डेवलपमेन्टल स्टेट, दानिश बुक्स, देहली.

मैकमिलन, जेम्स एच. एण्ड शैली, शूमेकर (1997), रिसर्च इन एजुकेशन, हार्पर रोलिर्स कॉलेज पब्लिशर्स, न्यूयॉर्क.

मेहता, अरूण सी. (2002), यूनिवर्सलाइजेशन ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन, जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन वॉ. XVII No. 4.

मिनिस्ट्री ऑफ इन्फोर्मेशन एण्ड ब्रोडकास्टिंग (2006), देहली हिस्ट्री एण्ड प्लेसेज ऑफ इन्ट्रेस्ट, पब्लिकेशन डिविजन, गवर्नमेन्ट ऑफ इंडिया, सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्पलेक्स लोधी रोड़, न्यू देहली.

पाण्डेय, कामता प्रसाद (2008), शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.

पाठक, आर. पी. और भारद्वाज, अमिता (2012), शिक्षा में अनुसंधान एवं सांख्यिकी, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली.

प्रकाश, रवि (2003), मैथड्स ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, न्यू देहली.

राजपूत, जे. एस. (2004), एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन एजुकेशन, वॉल्यूम 1 एण्ड 2 एन. सी. ई. आर. टी., न्यू देहली.

शर्मा, भारती (2004), मेथडोलोजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, बोहरा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, न्यू देहली.

सोती, शिवेन्द्र चन्द्र एण्ड शर्मा, राजेन्द्र के. (2004), रिसर्च इन एजुकेशन, अटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, न्यू देहली.

सुजाता, के. और रानी पी. गीता (2011), डेवलपमेन्ट ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन इन इण्डिया एक्सेस पार्टिसीपेशन डिलिवरी मैकेनिज्म एवं फाइनेसिंग, न्यूपा, शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली.

सुजाता, के. और रानी पी. गीता (2011), मैनेजमेन्ट ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन इन इण्डिया क्वालिटी परफॉरमैन्स एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली.

चढ़ा, संगीता (2001), क्रिटिकल स्टडी ऑफ नर्सरी एजुकेशन इन देहली, (पीएच.डी.), इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन एजुकेशन फेकल्टी ऑफ एजुकेशन जामिया–मिलिया इस्लामिया, न्यू देहली – 25.

चौधरी, आर.बी. (1990), हायर सैकण्डरी एजूकेशन इन द स्टेट ऑफ गुजरात डेवलपमेन्ट एण्ड प्रोबलम्स, पीएच. डी. (एजुकेशन), साऊथ गुजरात यूनिवर्सिटी, गुजरात.

सक्सेना, कृष्णा (2012), राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक विकास की प्रवृत्ति (1986–2008) का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (पीएच.डी.), वनस्थली विद्यापीठ.

बक्शी, के.डी. (1965), ए स्टडी ऑफ फिजीकल एजुकेशन इन देहली, सी.आई.ई., दिल्ली.

देसाई, एस.एच. (1972), ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द डेवलपमेन्ट ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन फॉर गर्ल्स इन गुजरात : इट्स हिस्ट्री एण्ड प्रजेन्ट डे प्रॉब्लम, पीएच.डी. (एजुकेशन), एम.एस.यू., बड़ौदा, 58–59.

दास, एल (1973), डेवलपमेन्ट ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन इन असम फ्रॉम 1874–1947 एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन द सोशिएल डेवलपमेन्ट, पीएच.डी., असम यूनिवर्सिटी, गौहाटी.

कौर, सुरिन्द्र पाल (1973), ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द डेवलपमेन्ट ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन इन पंजाब सिन्स द ईयर 1947, पीएच.डी. (एजुकेशन), पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला.

शर्मा, एस.पी. (1977), ए स्टडी ऑफ द डेवलपमेन्ट ऑफ प्राइमरी एजुकेशन इन देहली फ्रोम 1913 टू 1968, पीएच.डी. (एजूकेशन), कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरूक्षेत्र.

पैकिएम, एस. (1982), द प्रोग्रेस ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन इन तमिलनाडू (1950–1975), पीएच.डी. (एजुकेशन), 62.

शास्त्री, वी.बी. (1980), डेवलपमेन्ट ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन इन ओडिसा ड्यूरिंग 1882–1966, पीएच.डी. (एजुकेशन), एब्स्ट्रेक्ट 76.

जाला, जे. (1987), एन इन्वेस्टीगेशन इन टू द डेवलपमेन्ट ऑफ सैकेण्डरी एजुकेशन इन मेघालय सिन्स इन्डेपेन्डेन्स, पीएच.डी. (एजुकेशन), एन.ई.एच.यू. 101.

भारली, एल.डी. (1997), हिस्ट्री ऑफ हायर सैकण्डरी एजुकेशन इन मॉडर्न असम (1968–1990) ए प्रोस्पेक्टिव, पीएच.डी. (हिस्ट्री), गुहाटी यूनिवर्सिटी 413.

मुखोपाध्याय, मरमर (2002), माध्यमिक शिक्षा की चुनौतियाँ, परिप्रेक्ष्य–शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ नीपा, नई दिल्ली, वर्ष–9, अंक–3.

नुना, अनिता (2007), लड़कियों की माध्यमिक शिक्षाः चुनौतियाँ सामने हैं, जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, एन.सी. ई.आर.टी., नई दिल्ली, वो. 34 नं.–4, फरवरी 2009, 90.

सिंह, विरेन्द्र पी. एण्ड शर्मा, सन्दीप के. (2004), बेसिक फेसेलिटिज इन एलीमेन्ट्री लेवल स्कूल्स इन रूरल इंडिया, जर्नल ऑफ इंडियन एजूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली, वो. 34, नम्बर–1 मई 2008 91–106.

http:// www.mhrd.gov.in/statistics _data?tid

http://www.edudel. nic.in

http://www.delhi.gov.in